आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके
बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-139 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | जून 2026 | मूल्य - 5 रूपए

भीषण गर्मी से बचाव के लिए

हजारों सड़क एवं कामकाजी बच्चों तक पहुंची आपातकालीन गर्मी राहत पहल

बालकनामा रिपोर्टर

इस वर्ष मई और जून के महीनों में देश के कई हिस्सों में भीषण गर्मी ने लोगों का जीवन प्रभावित किया। राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा और उत्तर प्रदेश सहित कई राज्यों में तापमान 45 डिग्री सेल्सियस के पार पहुंच गया। मौसम विभाग लगातार हीटवेव की चेतावनियां जारी कर रहा था। सड़कों पर चलना मुश्किल हो गया था, दोपहर के समय बाजार सुनसान दिखाई देने लगे थे और लोग घरों से बाहर निकलने से बच रहे थे। लेकिन इस बढ़ती गर्मी का सबसे अधिक असर उन बच्चों पर पड़ा जो सड़कों पर रहते हैं, काम करते हैं या ऐसे समुदायों में रहते हैं जहां साफ पानी, पर्याप्त छांव और ठंडक जैसी बुनियादी सुविधाएं आसानी से उपलब्ध नहीं हैं।

दोपहर का समय है। सड़कें लगभग खाली हैं। लोग घरों में या छांव वाली जगहों पर रहने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन शहरों की कई बस्तियों में रहने वाले बच्चों के पास यह विकल्प हमेशा मौजूद नहीं होता। कोई अपने माता-पिता के साथ काम पर गया है, कोई पानी भरने के लिए लाइन में खड़ा है, तो कोई टिन की गर्म छत वाले घर से निकलकर किसी पेड़ की छांव तलाश रहा है। बढ़ती गर्मी ने इन बच्चों के सामने नई चुनौतियां खड़ी कर दी हैं।

बालकनामा रिपोर्टरों ने जयपुर, गुरुग्राम, दिल्ली, नोएडा और लखनऊ की बस्तियों में जाकर बच्चों, अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों से बातचीत की।

बातचीत के दौरान बच्चों ने बताया कि गर्मी अब केवल असुविधा नहीं रही, बल्कि उनके स्वास्थ्य, पढ़ाई और रोजमर्रा के जीवन को प्रभावित करने लगी है। ऐसे समय में शुरू हुई आपातकालीन गर्मी राहत पहल उनके लिए राहत और सहारे का महत्वपूर्ण माध्यम बनकर सामने आई। सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए गर्मी केवल एक मौसम नहीं बल्कि रोज का संघर्ष बन जाती है।

कई बच्चे ट्रैफिक सिग्नलों, बाजारों, रेलवे स्टेशनों, निर्माण स्थलों और कूड़ा बीनने वाले क्षेत्रों में अपना दिन बिताते हैं। तेज धूप और गर्म हवाओं के बीच उन्हें न केवल अपनी पढ़ाई और खेलकूद जारी रखनी पड़ती है, बल्कि कई बच्चों को परिवार की आजीविका में भी योगदान देना पड़ता है। ऐसे में डिहाइड्रेशन, चक्कर आना, सिरदर्द, बुखार, घमौरियां और थकान जैसी समस्याएं आम हो जाती हैं।

इन्हीं परिस्थितियों को देखते हुए जयपुर, गुरुग्राम, दिल्ली, नोएडा और लखनऊ में आपातकालीन गर्मी राहत पहल शुरू की गई। इस पहल के माध्यम से प्रतिदिन लगभग 2,500 से अधिक बच्चों तक राहत पहुंचाई जा रही है। बच्चों को ठंडा और सुरक्षित पेयजल, छाछ, ग्लूकोज बिस्किट,

ग्लूकोन-डी, केले, खीरा, नींबू पानी और अन्य पोषण सामग्री उपलब्ध कराई जा रही है। साथ ही बच्चों और समुदायों को गर्मी से बचाव, पर्याप्त पानी पीने और लू से सुरक्षित रहने के तरीकों के बारे में जानकारी भी दी जा रही है। यह पहल ऐसे समय शुरू की गई जब बढ़ती गर्मी बच्चों के स्वास्थ्य और दैनिक जीवन पर सीधा असर डाल रही थी।

जयपुर की विभिन्न बस्तियों में रहने वाले बच्चों ने बताया कि इस बार की गर्मी पिछले वर्षों की तुलना में कहीं अधिक कठिन रही। सुबह के समय कुछ राहत महसूस होती थी, लेकिन दोपहर होते-होते टिन की छतों वाले घर भट्टी की तरह गर्म हो जाते थे। ऐसे समय में बच्चों के लिए घर के अंदर रहना भी मुश्किल हो जाता था। कई बच्चे पेड़ों की छांव में समय बिताने की कोशिश करते थे, जबकि कुछ बच्चे अपने परिवार के साथ काम पर जाने को मजबूर थे। ऐसे में लगभग 600 बच्चों तक प्रतिदिन ठंडा और साफ पेयजल, छाछ, केले, खीरा, ग्लूकोज बिस्किट और ग्लूकोन-डी पहुंचाया गया।

13 वर्षीय मुस्कान (परिवर्तित नाम) बताती है, 'पहले दोपहर में बहुत कमजोरी महसूस होती थी। कई बार पढ़ाई करते-करते सिर दर्द शुरू हो जाता था। अब जब रोज छाछ और ठंडा पानी मिलता है तो काफी राहत महसूस होती है।'

12 वर्षीय आरिफ (परिवर्तित नाम), जो अपने पिता के साथ कबाड़ बीनने जाता है, कहता है, 'धूप में कई घंटे रहने के बाद जब ठंडा पानी और केला मिलता है तो शरीर में फिर से ताकत आ जाती है। पहले कई बार चक्कर आते थे लेकिन अब ऐसा कम होता है।'

11 वर्षीय पूजा (परिवर्तित नाम) बताती है, 'जब बहुत गर्मी होती है तो बाहर खेलने का मन नहीं करता। कई बार सिर भारी लगने लगता है। अब केंद्र पर ठंडा पानी और छाछ मिलने से अच्छा लगता है।' वहीं उसकी मां कहती हैं कि गर्मी के दिनों में बच्चों को स्वस्थ रखना सबसे बड़ी चुनौती बन जाती है। उनके अनुसार राहत सामग्री मिलने से बच्चों को पोषण और ऊर्जा दोनों मिल रही है।

बालकनामा रिपोर्टरों ने पाया कि राहत सामग्री और नियमित देखभाल मिलने के बाद चेतना संस्था के वैकल्पिक शिक्षा केंद्रों पर बच्चों की नियमित उपस्थिति भी बढ़ी। भीषण गर्मी के बावजूद बच्चे सीखने की गतिविधियों, खेलों और समूह बैठकों में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे। कई बच्चों ने बताया कि अब वे अपने घरों में भी बार-बार पानी पीने और गर्मी से बचाव के उपायों के बारे में परिवार के सदस्यों को बताते हैं। गुरुग्राम की बस्तियों में रहने वाले बच्चों की स्थिति भी कुछ अलग नहीं थी। अधिकांश परिवार अस्थायी बस्तियों में रहते हैं जहां टिन की छतें और छोटे कमरे गर्मी के दौरान रहने लायक नहीं रह जाते। यहां लगभग 700 बच्चों तक नियमित

शेष पृष्ठ 2 पर

स्कूल में शिक्षक के व्यवहार से बच्चे परेशान, जाँच की माँग

ब्यूरो रिपोट

यदि विश्वास करने वाले मनुष्य से ही विश्वास उठ जाए तो किस पर विश्वास करें? नोएडा सेक्टर चार मूर्ति के पास स्थित एक गांव की झुग्गी बस्ती में रहने वाली 15 वर्षीय बालिका नूतन (परिवर्तित नाम) और अन्य बच्चे अपने सरकारी स्कूल के एक शिक्षक के व्यवहार को लेकर बहुत परेशान है। बच्चों का कहना है कि शिक्षक का व्यवहार उनके प्रति अनुचित है, जिससे वे असहज और मानसिक रूप से परेशान महसूस करते हैं। बच्चों के अनुसार, जब यह शिक्षक कक्षा में पढ़ाने आते हैं, तो उनका देखने और बात करने का तरीका ठीक नहीं लगता। बच्चों ने आरोप लगाया कि शिक्षक कई बार बात करते समय आपत्तिजनक शब्दों का इस्तेमाल करते हैं और छड़ी से मारते भी हैं। कुछ बच्चों ने यह भी बताया कि शिक्षक का व्यवहार उन्हें असुरक्षित महसूस कराता है। यह स्कूल पहली से पांचवीं कक्षा तक संचालित होता है, जहां 10 अध्यापिकाएं और 3 अध्यापक कार्यरत हैं। बच्चों ने बताया कि संबंधित शिक्षक एक कक्षा को नियमित रूप से पढ़ाते हैं, लेकिन जब पांचवीं कक्षा की अध्यापिका अनुपस्थित रहती हैं, तब वे वहां भी पढ़ाने आते हैं। बच्चों का कहना है कि उन्होंने इस मामले की शिकायत स्कूल की अध्यापिकाओं और प्रधानाचार्या से भी की, लेकिन उनकी बात को गंभीरता से नहीं लिया गया। प्रधानाचार्या ने कहा कि उन्हें नहीं लगता कि शिक्षक इस प्रकार का व्यवहार कर सकते हैं। कुछ बच्चों ने यह भी बताया कि स्कूल

की कुछ अध्यापिकाएं भी उस शिक्षक के व्यवहार से असहज रहती हैं और उनसे कम बातचीत करती हैं। इस मामले को लेकर बच्चों के अभिभावकों ने भी प्रधानाचार्या से शिकायत की है, लेकिन अभी तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है। बच्चों की मांग है कि इस मामले की निष्पक्ष जांच की जाए और यदि आरोप सही पाए जाते हैं, तो संबंधित शिक्षक के खिलाफ उचित कार्रवाई हो। बच्चों का कहना है कि स्कूल ऐसा स्थान होना चाहिए जहां वे सुरक्षित महसूस करें और बिना डर के पढ़ाई कर सकें। यह मामला स्कूलों में बच्चों की सुरक्षा और शिक्षकों के व्यवहार को लेकर गंभीर सवाल खड़े करता है। बच्चों के लिए सुरक्षित और सम्मानजनक माहौल सुनिश्चित करना स्कूल और समाज दोनों की जिम्मेदारी है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

चक्करपुर की बस्ती में बड़ा हादसा टला, सूझबूझ से बचा एक मासूम का घर

बालकनामा रिपोर्टर काजल

गुरुग्राम के चक्करपुर की एक साधारण-सी बस्ती में हाल ही में एक ऐसी घटना हुई, जिसने पूरे इलाके के लोगों को डरा दिया। यह घटना एक बड़े हादसे में बदल सकती थी, लेकिन समय रहते लोगों की सतर्कता से बड़ा नुकसान होने से बच गया। बालकनामा की रिपोर्टर काजल जब बस्ती में पहुंचीं, तो वहां रहने वाले लोगों ने उन्हें बताया कि कुछ दिन पहले एक बच्चे के घर में आग लगने जैसी स्थिति बन गई थी। यह सुनकर काजल ने इस घटना के बारे में विस्तार से जानकारी ली। उन्होंने आसपास के बच्चों और लोगों से बात की।

तभी एक बालिका टीना (परिवर्तित नाम) आगे आई और बोली, 'दीदी, सच में यहां आग लगी थी।' बातचीत के दौरान बालिका ने बताया कि जिस घर में यह घटना हुई, वहां काशी (परिवर्तित नाम) नाम का बच्चा अपने परिवार के साथ रहता है। उस दिन सुबह काशी की मां रोज की तरह काम पर चली गई थीं। घर में उसके पिता और बच्चे ही थे। बच्चे स्कूल जाने की तैयारी कर रहे थे और उनके पिता रसोई में खाना बना रहे थे। बालिका ने बताया कि काशी के पापा ने गैस पर दाल उबलने के लिए रखी और फिर नहाने चले गए। इसी बीच बच्चे स्कूल के लिए निकल गए। नहाने के बाद उन्होंने जल्दी-जल्दी खाना खाया। तभी उनके ऑफिस से फोन आ गया कि तुरंत पहुंचना है। जल्दी में वे घर का दरवाजा बंद करके काम पर चले गए, लेकिन गैस बंद करना भूल गए। कुछ समय बाद गैस पर रखा पतीला लगातार गर्म होने लगा और कमरे में धुआं भरने लगा। धीरे-धीरे आग लगने जैसी स्थिति बन गई। अगर थोड़ी देर और हो जाती, तो पूरा घर आग की चपेट में आ सकता था। रिपोर्टर काजल ने पूछा कि फिर इस स्थिति को संभाला कैसे गया। बालिका ने बताया कि उसी समय वहां से एक बड़े भैया गुजर रहे थे। उनकी नजर ऊपर गई, जहां घर के अंदर से धुआं निकलता दिखाई दे रहा था। उन्हें तुरंत लगा कि कुछ गड़बड़ है।

उन्होंने आसपास के लोगों को बुलाया और सभी ने मिलकर घर का ताला तोड़ दिया। दरवाजा खोलते ही अंदर धुआं भरा हुआ था और गैस अभी भी जल रही थी। उस युवक ने तुरंत गैस बंद की और समय रहते स्थिति को संभाल लिया। इस तरह एक बड़ा हादसा टल गया। अगर थोड़ी और देर हो जाती, तो आसपास के घर भी इसकी चपेट में आ सकते थे। जब काशी और उसका परिवार वापस घर आया, तो वे यह सब सुनकर घबरा गए। साथ ही उन्होंने उस युवक का धन्यवाद भी किया, जिसने समय रहते उनका घर बचा लिया। काशी ने कहा, 'अगर भैया समय पर नहीं आते, तो हमारा घर जल सकता था।' इस घटना के बाद बस्ती के लोग पहले से ज्यादा सतर्क हो गए हैं। कई परिवारों ने कहा कि अब वे घर से बाहर जाने से पहले गैस और बिजली की चीजों को अच्छी तरह जांचेंगे। इस घटना ने सभी को यह सीख दी कि छोटी-सी लापरवाही भी बड़े हादसे का कारण बन सकती है।

भीषण गर्मी से बचाव के लिए हजारों सड़क एवं कामकाजी बच्चों तक पहुंची आपातकालीन गर्मी राहत पहल

पृष्ठ 1 का शेष

रूप से राहत सामग्री पहुंचाई गई। बच्चों को ठंडा पानी, छाछ, ग्लूकोज युक्त पेय और फल उपलब्ध कराए गए।

14 वर्षीय रानी (परिवर्तित नाम) बताती है, 'दोपहर के समय घर के अंदर बैठना मुश्किल हो जाता है। पंखा भी गर्म हवा देने लगता है। जब हम केंद्र पर पहुंचते हैं और ठंडा पानी या छाछ पीते हैं तो काफी अच्छा लगता है।'

13 वर्षीय सोनू (परिवर्तित नाम) कहता है, 'पहले हम दिन भर में बहुत कम पानी पीते थे। अब हमें बताया गया है कि गर्मी में बार-बार पानी पीना जरूरी है।' कई बच्चों ने बताया कि गर्मी के दिनों में रात को भी ठीक से नींद नहीं आती क्योंकि टिन की छत दिनभर गर्म रहने के बाद देर रात तक गर्मी छोड़ती रहती है। ऐसे में बच्चे घरों के बाहर या गलियों में बैठकर कुछ राहत पाने की कोशिश करते हैं। राहत कार्यक्रम के दौरान बच्चों को न केवल ठंडा पेय और पोषण सामग्री मिली बल्कि गर्मी से बचने के व्यावहारिक उपायों की जानकारी भी दी गई।

एक अभिभावक राजेश कुमार (परिवर्तित नाम) बताते हैं, 'हम सुबह से शाम तक मजदूरी करते हैं। बच्चों पर ध्यान देना हमेशा संभव नहीं होता। ऐसे समय में यह राहत कार्यक्रम हमारे लिए बहुत बड़ा सहारा बना है।'

एक समुदाय सदस्य ने बताया कि पहले बच्चे दिनभर धूप में खेलते रहते थे, लेकिन अब वे स्वयं एक-दूसरे को धूप से बचने और बार-बार पानी पीने की सलाह देते हैं। यह बदलाव जागरूकता का सकारात्मक परिणाम है। दिल्ली में इस वर्ष गर्मी का प्रभाव विशेष रूप से गंभीर रहा। मौसम विभाग की चेतावनियों और बढ़ते तापमान के बीच सड़क एवं कामकाजी बच्चों के स्वास्थ्य पर भी इसका असर दिखाई दिया।

पश्चिमी, दक्षिणी और उत्तर-पश्चिमी दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिदिन 500 से अधिक बच्चों तक राहत पहुंचाई गई। बच्चों को छाछ, नींबू पानी, रूह अफ्जा, ग्लूकोन-डी और ग्लूकोज बिस्किट उपलब्ध कराए गए।

दिल्ली में इस पहल की एक विशेष पहचान 'वॉटर बेल सिस्टम' रहा। इसके तहत नियमित अंतराल पर बच्चों को पानी पीने की याद दिलाई जाती थी। शुरूआत में कई बच्चों को यह अजीब लगा, लेकिन कुछ ही दिनों में यह उनकी आदत का हिस्सा बन गया।

बालकनामा रिपोर्टरों ने देखा कि वॉटर बेल सिस्टम बच्चों के बीच काफी लोकप्रिय हो गया। जैसे ही घंटी बजती, बच्चे अपनी गतिविधियां रोककर पानी पीने के लिए एकत्रित हो जाते। धीरे-धीरे यह केवल एक गतिविधि नहीं बल्कि एक आदत बन गई। कई बच्चों ने बताया कि अब वे घर पर भी समय-समय पर पानी पीने का ध्यान रखते हैं।

13 वर्षीय जोया (परिवर्तित नाम) बताती है, 'जब वॉटर बेल बजती थी तो हम सब मिलकर पानी पीते थे। अब मुझे समझ में आया है कि गर्मी में शरीर को बार-बार पानी की जरूरत होती है।'

12 वर्षीय अमृत (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'मुझे चेतना संस्था के शिक्षा केंद्र पर मिलने वाली छाछ बहुत पसंद है। इससे गर्मी में काफी राहत मिलती है।'

11 वर्षीय रब्बान (परिवर्तित नाम) कहता है, 'मैंने यहां सीखा कि ग्लूकोन-डी और अन्य पेय कैसे तैयार किए जाते हैं ताकि शरीर में पानी की कमी न हो।'

15 वर्षीय दीपांशु (परिवर्तित नाम) बताते हैं, 'जब हम केंद्र पर ठंडे पेय पीते हैं तो शरीर में फिर से ऊर्जा महसूस होती है। इससे पढ़ाई और अन्य गतिविधियों में भी मन लगता है।'

समुदाय की महिलाओं ने बताया कि बच्चों ने घर आकर उन्हें भी गर्मी से बचने के तरीके बताए। कुछ बच्चों ने अपने छोटे भाई-बहनों को भी नियमित रूप से पानी पीने की आदत डालने की कोशिश की।

कई समुदायों में बच्चों और अभिभावकों ने मिलकर नींबू पानी तैयार किया और एक-दूसरे के साथ गर्मी से बचने के उपाय साझा किए। इससे समुदाय में भी जागरूकता बढ़ी और बच्चों के स्वास्थ्य के प्रति सामूहिक जिम्मेदारी की भावना मजबूत हुई।

नोएडा की झुग्गी बस्तियों में रहने वाले बच्चों ने बताया कि गर्मी के दौरान उनके घर दिन के समय बेहद गर्म हो जाते हैं। कई परिवार छोटे कमरों में रहते हैं जहां पर्याप्त हवा आने की व्यवस्था नहीं होती। ऐसे में बच्चे दिन का अधिकांश समय छांव की तलाश में बिताते हैं। राहत गतिविधियों के दौरान बच्चों को ठंडा पानी, छाछ, ग्लूकोज और अन्य पोषण सामग्री उपलब्ध कराई गई।

15 वर्षीय रूहानी (परिवर्तित नाम) बताती है, 'पहले हम केवल गर्मी सहते थे। अब हमें बताया गया है कि गर्मी में खुद को कैसे सुरक्षित रखना है।'

16 वर्षीय राकेश (परिवर्तित नाम), जो अपने परिवार के साथ फल की रेहड़ी लगाने में मदद करता है, कहता है, 'धूप में रेहड़ी ले जाना बहुत मुश्किल होता है। राहत सामग्री मिलने से काफी मदद मिली और हमें गर्मी से बचाव के बारे में भी जानकारी मिली।'

कई बच्चों ने बताया कि दोपहर के समय बस्तियों में रहने वाले लोग अक्सर पेड़ों की छांव या सार्वजनिक स्थानों पर जाकर बैठते हैं क्योंकि घरों के अंदर रहना मुश्किल हो जाता है। बच्चों ने कहा कि राहत कार्यक्रम के दौरान उन्हें यह समझने में मदद मिली कि केवल गर्मी सहना ही समाधान नहीं है, बल्कि खुद को सुरक्षित रखने के लिए कुछ सावधानियां भी जरूरी हैं।

एक अभिभावक ने बताया कि पहले बच्चों को गर्मी में बार-बार बीमार पड़ते देखा जाता था, लेकिन अब वे पानी पीने और धूप से बचने के प्रति अधिक सजग दिखाई देते हैं। बच्चों ने बताया कि अब वे घर से निकलते समय सिर ढकने की कोशिश करते हैं, अपने साथ पानी रखते हैं और जरूरत पड़ने पर छांव में आराम भी करते हैं।

लखनऊ में भी गर्मी का असर बच्चों के जीवन पर स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। कई बच्चों ने बताया कि तेज धूप के कारण उन्हें थकान, कमजोरी और सिरदर्द जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता था। राहत अभियान के दौरान बच्चों तक ठंडा पानी, छाछ और अन्य पोषण सामग्री पहुंचाई गई।

13 वर्षीय सना (परिवर्तित नाम) बताती है, 'गर्मी में कई बार पढ़ाई करने का मन नहीं करता था क्योंकि शरीर बहुत थक जाता था। अब राहत सामग्री मिलने से बेहतर महसूस होता है।'

14 वर्षीय इरफान (परिवर्तित नाम) कहते हैं, 'हमें बताया गया कि गर्मी में कैसे सुरक्षित रहना है। अब हम अपने दोस्तों और छोटे भाई-बहनों को भी यही बातें बताते हैं।'

कई बच्चों ने बताया कि गर्मी के कारण वे पहले जल्दी थक जाते थे और पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पाते थे। राहत सामग्री मिलने और जागरूकता गतिविधियों में भाग लेने के बाद उनमें सकारात्मक बदलाव दिखाई दिया। बच्चों ने बताया कि अब वे अपने साथ पानी रखने और समय-समय पर पीने की कोशिश करते हैं।

समुदाय के सदस्यों का कहना है कि इस तरह की पहलें केवल तत्काल राहत ही नहीं देतीं बल्कि बच्चों और परिवारों को भविष्य में आने वाली ऐसी परिस्थितियों से निपटने के लिए भी तैयार करती हैं। उनका मानना है कि बढ़ती गर्मी के दौर में बच्चों तक समय पर राहत पहुंचाना बेहद जरूरी है क्योंकि बच्चे ही सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। इस पूरी पहल का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह रहा कि बच्चों ने केवल राहत सामग्री प्राप्त नहीं की बल्कि उन्होंने गर्मी से बचाव के उपाय भी सीखे। कई बच्चों ने पहली बार डिहाइड्रेशन, हीट स्ट्रोक और लू जैसी समस्याओं के बारे में जाना। उन्होंने सीखा कि बार-बार पानी पीना क्यों जरूरी है, धूप में निकलते समय सिर ढकना क्यों आवश्यक है और शरीर में पानी की कमी होने पर क्या करना चाहिए।

बालकनामा रिपोर्टरों ने देखा कि राहत गतिविधियों के दौरान कई बच्चे स्वयं आगे बढ़कर अपने साथियों की मदद कर रहे थे। कोई पानी बांट रहा था, कोई छोटे बच्चों को छांव में बैठा रहा था, तो कोई उन्हें बार-बार पानी पीने की याद दिला रहा था। इससे यह भी पता चलता है कि सही जानकारी और अवसर मिलने पर बच्चे स्वयं बदलाव के वाहक बन सकते हैं।

बालकनामा रिपोर्टरों ने जयपुर, गुरुग्राम, दिल्ली, नोएडा और लखनऊ की बस्तियों में बच्चों, अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों से बातचीत के दौरान पाया कि भीषण गर्मी बच्चों के जीवन की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक बनती जा रही है। जिन बच्चों के पास पक्के घर, ठंडा पानी, कूलर या अन्य सुविधाएं नहीं हैं, उनके लिए गर्मी का हर दिन एक संघर्ष की तरह होता है। कई बच्चों ने बताया कि पहले वे गर्मी को सामान्य मौसम की तरह लेते थे, लेकिन अब उन्हें समझ में आया है कि लू, डिहाइड्रेशन और अत्यधिक गर्मी उनके स्वास्थ्य पर गंभीर असर डाल सकते हैं। राहत गतिविधियों के दौरान मिली जानकारी और सहयोग ने उन्हें खुद का ख्याल रखने और दूसरों को भी जागरूक करने का आत्मविश्वास दिया है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

नन्हे परिंदे वैन से बदली जिंदगी की दिशा, अब स्कूल जाने की तैयारी में बालिका

बातूनी रिपोर्टर चांदनी व रिपोर्टर किशन

नोएडा सेक्टर 67 की झुग्गी बस्ती में रहने वाली 12 वर्षीय किरण (परिवर्तित नाम) की जिंदगी में अब एक नया बदलाव देखने को मिल रहा है। लंबे समय तक पढ़ाई से दूर रहने के बाद अब उसे शिक्षा से जुड़ने का मौका मिला है। इस बदलाव से न केवल वह खुश है, बल्कि उसके माता-पिता भी अपनी बेटी के भविष्य को लेकर उम्मीद महसूस कर रहे हैं। किरण ने बताया कि उसके परिवार में केवल तीन सदस्य हैं, माता, पिता और वह स्वयं। उनका परिवार पिछले छह वर्षों से इस बस्ती में रह रहा है। उसके माता-पिता दिहाड़ी मजदूरी करने के साथ-साथ कबाड़ छांटने का काम करते हैं। रोज सुबह वे काम पर चले जाते हैं और देर शाम घर लौटते हैं। ऐसे में घर की कई जिम्मेदारियां किरण को संभालनी पड़ती थीं। घर के कामों और आर्थिक परेशानियों के कारण वह पिछले चार वर्षों से स्कूल नहीं जा पाई। किरण ने बताया कि जब वह आसपास के बच्चों को स्कूल जाते हुए देखती थी, तो उसका भी मन पढ़ने का करता था। वह भी किताबें पढ़ना और लिखना सीखना चाहती थी, लेकिन

परिवार की परिस्थितियों के कारण यह संभव नहीं हो पा रहा था। धीरे-धीरे उसे लगने लगा था कि शायद अब वह कभी पढ़ाई नहीं कर पाएगी। लेकिन हाल ही में बस्ती में 'नन्हे परिंदे वैन' के आने से उसकी जिंदगी में बदलाव शुरू हुआ। इस पहल के जरिए उसे पढ़ने-लिखने का अवसर मिला। अब वह नियमित रूप से पढ़ाई करने जाती है और नई चीजें सीख रही है। उसने खुशी जताते हुए बताया कि अब वह हिंदी पढ़ना सीख रही है और लिखने की भी कोशिश कर रही है। पढ़ाई शुरू होने के बाद उसका आत्मविश्वास भी बढ़ा है। उसने यह भी बताया कि अब उसका आधार कार्ड बन चुका है, जो पहले नहीं था। इससे वह बहुत खुश है, क्योंकि अब वह स्कूल में दाखिला लेने की तैयारी कर रही है। उसे उम्मीद है कि जल्द ही वह दूसरे बच्चों की तरह स्कूल जाकर पढ़ाई कर सकेगी। किरण के माता-पिता भी अपनी बेटी को पढ़ता देखकर बेहद खुश हैं। उनका कहना है कि वे चाहते हैं कि उनकी बेटी पढ़-लिखकर अपने पैरों पर खड़ी हो और जीवन में आगे बढ़े। उनका मानना है कि शिक्षा बच्चों के बेहतर भविष्य की सबसे बड़ी कुंजी है।

जब माता-पिता ही बच्चों को गलत रास्ता दिखाएं, तो बच्चे क्या करें ?

बातूनी रिपोर्टर सनी व रिपोर्टर किशन

नोएडा के चार मूर्ति क्षेत्र के पास स्थित एक बस्ती से बच्चों से जुड़ी एक चिंताजनक स्थिति सामने आई है। बाल अधिकारों पर काम करने वाले मंच 'बालकनामा' के पत्रकारों से बातचीत के दौरान बस्ती में रहने वाली 14 वर्षीय एक बालिका नेहा (परिवर्तित नाम) ने वहां के माहौल को लेकर अपनी चिंता साझा की। बालिका ने बताया कि बस्ती का वातावरण बच्चों के लिए सुरक्षित नहीं है। यहां केवल बड़े लोग ही नहीं, बल्कि कम उम्र के बच्चे भी तेजी से नशे की तरफ बढ़ रहे हैं। उसके अनुसार, बस्ती में एक ऐसा परिवार भी है जहां माता-पिता खुद नशा करते हैं और अपने बच्चों को भी इससे नहीं रोकते। बल्कि, वे बच्चों को गुटखा, बीड़ी और शराब जैसी चीजें लेने के लिए बढ़ावा देते हैं। बच्चों के मुताबिक, नशे की चपेट में आने वाले कई बच्चों की उम्र 12 से 15 साल के बीच है। जब कुछ बच्चों ने इस बात का विरोध किया और बड़ों से शिकायत की, तो उनकी बात को गंभीरता से नहीं लिया गया। उन्हें यह कहकर टाल दिया गया कि 'इससे कोई नशा नहीं होता।' बस्ती के बच्चों ने यह भी बताया कि कई बच्चे कबाड़ बीनकर जो पैसे कमाते हैं, उन्हीं पैसों से नशे की चीजें खरीद लेते हैं। माता-पिता खुद नशे में रहने के कारण बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाते। इसका असर बच्चों की पढ़ाई पर भी पड़ रहा है। कई बच्चे स्कूल से दूर होते जा रहे हैं और दिनभर इधर-उधर घूमते रहते हैं। इस स्थिति को देखकर बस्ती के दूसरे बच्चे भी दुख और चिंता महसूस करते हैं। उनका कहना है कि अपने दोस्तों को इस रास्ते पर जाते देख उन्हें बहुत बुरा लगता है। यह सवाल बहुत जरूरी है कि आखिर कब तक बच्चों का भविष्य इस तरह अंधेरे में जाता रहेगा। बच्चों को सुरक्षित माहौल, सही मार्गदर्शन और अच्छी संगति मिलना बहुत जरूरी है। इसके लिए माता-पिता, समाज और आसपास के लोगों को मिलकर जिम्मेदारी उठानी होगी, ताकि बच्चे नशे और गलत आदतों से दूर रहकर एक बेहतर भविष्य की ओर बढ़ सकें।

खुले सीवर से सांस लेना हुआ मुश्किल, बस्ती के बच्चे हुए परेशान

बालकनामा रिपोर्टर- ओमांश
बातूनी रिपोर्टर- रिया

गुरुग्राम के घाटा गाँव की बस्ती में इन दिनों स्वच्छता की गंभीर समस्या देखने को मिल रही है। बस्ती में खुले सीवर और गंदगी के कारण लोगों का जीवन प्रभावित हो रहा है। यह स्थिति बालकनामा रिपोर्टर ओमांश के दौरे के दौरान सामने आई। दौरे के समय देखा गया कि बस्ती के मुख्य रास्ते पर सीवर खुला हुआ है और गंदा पानी सड़क पर बह रहा है। इसके कारण आसपास गंदगी फैल रही है और पूरे इलाके में तेज बदबू बनी रहती है। यह रास्ता स्थानीय लोगों और स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए मुख्य मार्ग है। बच्चों ने बताया कि उन्हें रोज स्कूल आते-जाते समय इस गंदगी और बदबू का सामना करना पड़ता है। कई बच्चे बदबू से बचने के लिए अपने मुंह पर हाथ या कपड़ा रखकर इस रास्ते से गुजरते हैं। उनका कहना है कि बरसात के समय स्थिति और भी खराब हो जाती है, क्योंकि गंदा पानी पूरे रास्ते में फैल जाता है। लगातार गंदगी और खुले सीवर के संपर्क में रहने से बच्चों और स्थानीय लोगों में बीमारियों का खतरा बढ़ रहा है। बच्चों ने बताया कि कई लोगों को खुजली, एलर्जी और त्वचा संबंधी समस्याएँ होने लगी हैं। खुले सीवर और जमा गंदे पानी के कारण इलाके में मक्खियों और मच्छरों की संख्या भी बढ़ गई है, जिससे डेंगू, मलेरिया और अन्य बीमारियों का डर बना रहता है। स्थानीय लोगों का कहना है कि बदबू और गंदगी के कारण वातावरण इतना खराब हो गया है कि वहाँ रहना मुश्किल हो रहा है। उन्होंने बताया कि जब कोई बाहरी व्यक्ति इस बस्ती में आता है, तो वह यहाँ की स्थिति देखकर हैरान रह जाता है और पूछता है कि लोग ऐसी जगह पर कैसे रह रहे हैं। बस्ती के लोगों का कहना है कि इस समस्या की ओर जल्द ध्यान दिया जाना चाहिए, ताकि बच्चों और अन्य लोगों को साफ और सुरक्षित वातावरण मिल सके। लोगों का मानना है कि साफ-सफाई और सीवर व्यवस्था ठीक होने से बच्चों का स्वास्थ्य बेहतर रहेगा और उन्हें रोज होने वाली परेशानियों से राहत मिलेगी।

पापा, शराब छोड़ दो... मुझे स्कूल जाना है

बातूनी रिपोर्टर नैना व रिपोर्टर किशन

नोएडा के चार मूर्ति क्षेत्र के पास स्थित झुग्गी बस्तियों में हाल ही में पत्रकारों के एक दौरे के दौरान एक ऐसी घटना सामने आई, जिसने सभी को सोचने पर मजबूर कर दिया। बातचीत के दौरान एक नाबालिग बालिका ने अपने परिवार की परेशानियों के बारे में बताया। मुस्कान (परिवर्तित नाम) ने बताया कि उसके परिवार में माता-पिता, वह स्वयं और उसका लगभग 5 साल का छोटा भाई है। उसके माता-पिता दिहाड़ी मजदूरी (बेलदारी) का काम करते हैं और पूरा परिवार किराए की झुग्गी में रहता है। उसने कहा कि वह भी रोज अपने माता-पिता के साथ काम पर जाती है और वहां अपने छोटे भाई की देखभाल करती है। इसी कारण उसकी पढ़ाई पूरी तरह छूट गई है। बातचीत के दौरान मुस्कान ने आगे बताया कि उसके पिता शराब

पीने के आदी हैं। वह अक्सर नशे में घर आते हैं और घर में झगड़ा करते हैं। बालिका की मां कई बार पिता से उसकी पढ़ाई के लिए स्कूल में दाखिला कराने की बात करती हैं, लेकिन हर बार बात टाल दी जाती है। इसी बात को लेकर घर में रोज विवाद होता है। कई बार झगड़ा इतना बढ़ जाता है कि आसपास के लोग भी देखने लगते हैं। बाद में लोग परिवार का मजाक उड़ाते हैं, जिससे बालिका को बहुत बुरा लगता है। मुस्कान ने भावुक होकर कहा, 'मुझे घर की लड़ाई बिल्कुल अच्छी नहीं लगती। मैं चाहती हूं कि मेरे पिताजी शराब छोड़ दें और मेरा स्कूल में दाखिला करा दें।' यह घटना सिर्फ एक परिवार की परेशानी नहीं दिखाती, बल्कि यह भी बताती है कि गरीबी, नशे की लत और शिक्षा की कमी किस तरह बच्चों के भविष्य को प्रभावित कर रही है। जब बच्चे स्कूल जाने की उम्र में मजदूरी वाली जगहों पर समय बिताने लगें, तो यह समाज के लिए चिंता की बात है। सवाल यह भी उठता है कि जब परिवार का जिम्मेदार सदस्य ही बच्चों की पढ़ाई और घर की शांति के लिए परेशानी का कारण बन जाए, तो ऐसे परिवार मदद के लिए कहां जाएं? समाज और प्रशासन को मिलकर ऐसे परिवारों तक सहायता और सही मार्गदर्शन पहुंचाने की जरूरत है, ताकि बच्चों का बचपन और भविष्य सुरक्षित रह सके।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

खेल प्रतियोगिता में बस्ती के बच्चों ने जीते कई पदक

बालकनामा रिपोर्टर धर्मराज

हाल ही में गवर्नमेंट मॉडल संस्कृति प्राइमरी स्कूल, रोजवुड सिटी, सेक्टर 49, गुरुग्राम में आयोजित खेल प्रतियोगिता में घसोला बस्ती से आने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने शानदार प्रदर्शन किया। बच्चों ने अलग-अलग खेलों में भाग लेकर कई पदक जीते और अपनी मेहनत व प्रतिभा से सभी को गर्व महसूस कराया। इस उपलब्धि को बालकनामा रिपोर्टर धर्मराज ने भी साझा किया। जब उन्होंने बच्चों से बातचीत की, तो उनके चेहरों पर खुशी, आत्मविश्वास और उत्साह साफ दिखाई दे रहा था। बच्चों ने बताया कि उन्हें खेलों में भाग लेकर बहुत अच्छा लगा और वे आगे भी इसी तरह मेहनत करना चाहते हैं। 13 साल के शिवम ने प्रतियोगिता में तीन पदक जीतकर खास उपलब्धि हासिल की। उसने फ्रॉग रेस और वन लेग रेस में प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि दौड़ प्रतियोगिता में तृतीय स्थान हासिल किया। धर्मराज ने भी सैक रेस में प्रथम और दौड़ में तृतीय स्थान प्राप्त किया। 12 वर्षीय मुस्कान ने लेमन रेस में प्रथम स्थान हासिल कर अपनी प्रतिभा दिखाई। वहीं 11 साल की तानिया ने वन लेग रेस में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। बच्चों की इस सफलता से उनके परिवारों में खुशी का माहौल है। बस्ती के अन्य बच्चों में भी अब स्कूल जाने, खेलों में भाग लेने और शिक्षा से जुड़ने की नई प्रेरणा दिखाई दे रही है। यह सफलता बताती है कि यदि बच्चों को सही अवसर, प्रोत्साहन और मार्गदर्शन मिले, तो वे हर क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं और अपने सपनों को पूरा करने की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

गैस सिलेंडर की किल्लत के कारण बच्चे पढ़ाई छोड़ लकड़ियाँ लाने को मजबूर

बालकनामा रिपोर्टर फारूख

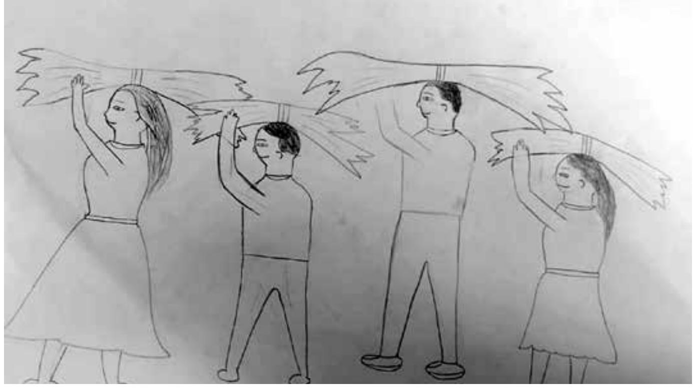

वजीराबाद क्षेत्र में इन दिनों गैस सिलेंडर की कमी लोगों के लिए बड़ी परेशानी बन गई है। इसका सबसे ज्यादा असर बच्चों की पढ़ाई पर पड़ रहा है।

बालकनामा रिपोर्टर फारूख के दौरे के दौरान यह समस्या सामने आई। स्थानीय लोगों ने बताया कि इलाके में गैस सिलेंडर समय पर नहीं मिल रहे हैं। कई बार लोगों को लंबे समय तक इंतजार करना पड़ता है। गैस न मिलने के कारण गरीब परिवारों को खाना बनाने के लिए लकड़ियों का सहारा लेना पड़ रहा है। लकड़ियां इकट्ठा करने की जिम्मेदारी अक्सर बच्चों पर आ जाती है। कई बच्चों को स्कूल जाने के बजाय जंगलों और खाली जगहों से लकड़ियां लाने भेजा जा रहा है। इससे उनकी पढ़ाई प्रभावित हो रही है और वे धीरे-धीरे शिक्षा से दूर होते जा रहे हैं।

बच्चों ने बताया कि वे स्कूल जाना और पढ़ाई करना चाहते हैं, लेकिन घर की जरूरतों के कारण उन्हें यह काम करना पड़ता है। सुरेश (परिवर्तित नाम) ने कहा, 'जब घर में गैस नहीं होती, तो हमें लकड़ियां लानी पड़ती हैं। कभी-कभी इसी वजह से स्कूल भी नहीं जा पाते।'

स्थानीय लोगों का कहना है कि अगर गैस सिलेंडर की सप्लाई समय पर हो, तो बच्चों को इस तरह की परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। उनका मानना है कि बच्चों का समय पढ़ाई में लगना चाहिए, न कि लकड़ियां इकट्ठा करने में। यह समस्या केवल गैस की कमी तक सीमित नहीं है, बल्कि बच्चों के भविष्य और शिक्षा से भी जुड़ी हुई है। जरूरत है कि संबंधित विभाग इस समस्या पर जल्द ध्यान दे, ताकि बच्चों की पढ़ाई प्रभावित न हो और परिवारों को राहत मिल सके।

ऊँची इमारतों के साए में सिमटता बचपन

बालकनामा रिपोर्टर- नंदिनी

गुरुग्राम के जलवायु टावर कॉन्टैक्ट पॉइंट की बस्ती में आयोजित एक सपोर्ट ग्रुप मीटिंग के दौरान एक ऐसा दृश्य सामने आया, जिसने बच्चों के बचपन और समाज की जिम्मेदारी को लेकर कई सवाल खड़े कर दिए। बालकनामा रिपोर्टर नंदनी के दौरे के दौरान यह देखा गया कि कई छोटे बच्चे काम में लगे हुए थे। कोई सामान उठाने में मदद कर रहा था, तो कोई घर के कामों में व्यस्त था। यह केवल एक सामान्य दृश्य नहीं था, बल्कि उस सच्चाई की झलक थी जहाँ आर्थिक और सामाजिक मजबूरियों के कारण बच्चों का बचपन धीरे-धीरे पीछे छूटता जा रहा है। एक तरफ शहर में ऊँची इमारतें, बड़ी सड़कें और आधुनिक सुविधाएँ तेजी से बढ़ रही हैं, वहीं दूसरी तरफ कई बच्चे आज भी शिक्षा और सुरक्षित बचपन से दूर हैं। जिस उम्र में बच्चों के हाथों में किताबें, कॉपियाँ और खिलौने होने चाहिए, उस उम्र में वे जिम्मेदारियों और काम के बोझ में उलझ रहे हैं। इसका असर केवल उनके आज पर नहीं पड़ता,

बल्कि उनके भविष्य पर भी पड़ता है। जब बच्चे पढ़ाई से दूर हो जाते हैं, तो उनके सपने और आगे बढ़ने के मौके भी सीमित हो जाते हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि बच्चों का काम में लगना केवल गरीबी की वजह से नहीं होता। इसके पीछे जागरूकता की कमी और सरकारी योजनाओं का सही तरीके से जरूरतमंद लोगों तक न पहुँच पाना भी एक बड़ा कारण है। कई बार परिवार अपनी परिस्थितियों के कारण बच्चों को काम में लगा देते हैं, जबकि बच्चों को सबसे ज्यादा जरूरत शिक्षा, सुरक्षा और सही मार्गदर्शन की होती है। यह स्थिति समाज और व्यवस्था दोनों के सामने एक बड़ा सवाल खड़ा करती है की क्या विकास केवल बड़ी इमारतों और सुविधाओं तक सीमित है, या इसमें बच्चों का सुरक्षित और बेहतर भविष्य भी शामिल होना चाहिए? जरूरी है कि ऐसे बच्चों की पहचान कर उन्हें शिक्षा, सहायता और सुरक्षित माहौल से जोड़ा जाए। इसके लिए सामाजिक संस्थाओं, प्रशासन और समुदाय को मिलकर काम करना होगा, ताकि हर बच्चे को पढ़ने, खेलने और सुरक्षित बचपन जीने का मौका मिल सके। यह दृश्य एक बार फिर याद दिलाता है कि सच्चा विकास वही है, जहाँ शहर की तरक्की के साथ-साथ बच्चों का भविष्य भी उज्ज्वल हो। जब तक हर बच्चे को सम्मान, सुरक्षा और शिक्षा नहीं मिलेगी, तब तक विकास की तस्वीर अधूरी रहेगी।

अभिभावकों के आपसी झगड़ों में खो रहा बच्चों का बचपन

बालकनामा रिपोर्टर- तन्मय सिंह

कम्युनिटी में बढ़ते पारिवारिक झगड़े बच्चों के जीवन और उनके भविष्य पर बुरा असर डाल रहे हैं। बालकनामा रिपोर्टर तन्मय सिंह के दौरे के दौरान एक ऐसा मामला सामने आया, जहाँ माता-पिता के लगातार विवाद के कारण बच्चों का बचपन और उनकी पढ़ाई दोनों प्रभावित हो रहे हैं। दौरे के दौरान एक बालक ने अपने दोस्त की स्थिति के बारे में बताया। उसने कहा कि उसका दोस्त मूल रूप से पश्चिम बंगाल का रहने वाला है। उसके माता-पिता के बीच लगभग हर दिन झगड़ा होता है। परिवार में आर्थिक तंगी और काम की कमी इस विवाद की सबसे बड़ी वजह है। बच्चे की माँ को काफी कोशिशों के बाद भी स्थायी काम नहीं मिल पाया। बाद में उन्होंने एक मंदिर में झाड़ू लगाने का काम शुरू किया, जहाँ उन्हें महीने में लगभग 1500 रुपये मिलते थे। इसके अलावा, वह कभी-कभी मंदिर के बाहर लोगों से मदद मांगकर अपने बच्चों का पालन-पोषण करने की कोशिश करती थीं। बच्चे के पिता चाहते थे कि उनकी पत्नी ज्यादा पैसे कमाकर लाए। जब माँ ने अपनी मजबूरी बताते हुए कहा कि वह अपनी पूरी क्षमता से काम कर रही हैं, तब दोनों के बीच विवाद बढ़ गया। धीरे-धीरे यह झगड़ा मारपीट तक पहुँच गया। स्थिति इतनी खराब हो गई कि पिता ने माँ को घर से बाहर निकाल दिया। इसके बाद माँ अलग रहने लगीं, जबकि बच्चे अपने पिता के साथ रहने लगे। अब पिता बच्चों को अपने साथ कबाड़ बीनने के काम पर ले जाते हैं। इस कारण बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे हैं और उनकी पढ़ाई छूटती जा रही है। साथ ही, वे अपनी माँ से भी दूर हो गए हैं। इस स्थिति का बच्चों के मानसिक और शैक्षिक विकास पर गहरा असर पड़ रहा है। बच्चों को न तो सुरक्षित माहौल मिल पा रहा है और न ही पढ़ाई जारी रखने का मौका। माँ का कहना है कि वह अपने बच्चों को अच्छा भविष्य देना चाहती हैं, लेकिन गरीबी और खराब परिस्थितियाँ उनके सामने बड़ी चुनौती बनी हुई हैं। ऐसे पारिवारिक विवाद बच्चों के बचपन को प्रभावित करते हैं। कई बार बच्चे तनाव, डर और असुरक्षा के माहौल में बड़े होते हैं, जिससे उनका आत्मविश्वास और भविष्य दोनों प्रभावित हो सकते हैं। समाज और परिवारों को मिलकर यह समझने की जरूरत है कि माता-पिता के झगड़ों का सबसे ज्यादा असर बच्चों पर पड़ता है। इसलिए बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए घर का माहौल सुरक्षित और शांत होना बहुत जरूरी है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

जिम्मेदारियों के बोझ तले दबा बचपन, पढ़ाई से दूर हो रहे बच्चे

बालकनामा रिपोर्टर- धर्मराज

गुरुग्राम की घसोला समुदाय में बाल श्रम और आर्थिक मजबूरी की एक मार्मिक तस्वीर सामने आई है। बालकनामा रिपोर्टर धर्मराज के दौरे के दौरान एक ऐसा मामला सामने आया, जिसमें एक किशोर कम उम्र में ही परिवार की जिम्मेदारियां उठाने को मजबूर है। दौरे के दौरान धर्मराज ने एक बच्चे को रेहड़ी पर फल और सब्ज़ियां बेचते हुए देखा। बातचीत करने पर बच्चे ने अपना नाम रहमान (परिवर्तित नाम) बताया। उसकी उम्र लगभग 14 वर्ष है और वह फजीलपुर में रहता है। रहमान अपने चाचा के साथ रेहड़ी लगाकर आसपास के गांवों में फेरी करता है, ताकि कुछ पैसे कमा सके और परिवार की मदद कर सके। रहमान ने बताया कि उसके पिता का निधन हो चुका है। परिवार में चार भाई-बहन हैं और उनकी मां मजदूरी करके घर चलाती हैं। लेकिन उनकी कमाई इतनी नहीं है कि घर का खर्च, भोजन और झुग्गी का किराया आसानी से पूरा हो सके। कई बार परिवार को भरपेट खाना भी नहीं मिल पाता। इन्हीं परिस्थितियों के कारण रहमान ने अपने चाचा के साथ काम करना शुरू कर

दिया। उसने बताया कि वह अपनी मां की मदद करना चाहता है, ताकि उसके छोटे भाई-बहनों को भूखा न रहना पड़े। जब धर्मराज ने उससे पढ़ाई के बारे में पूछा, तो रहमान ने बताया कि वह पहले स्कूल जाता था, लेकिन अब उसने पढ़ाई छोड़ दी है। उसने कहा, 'अगर मैं स्कूल जाऊंगा, तो पैसे नहीं कमा पाऊंगा। फिर घर में खाने की परेशानी हो जाएगी। मैं अपने परिवार को भूखा नहीं देख सकता।' रहमान की बातों से उसकी मजबूरी साफ दिखाई देती है। जिस उम्र में बच्चों को स्कूल में पढ़ना और खेलना चाहिए, उस उम्र में वह अपने परिवार की जिम्मेदारियां निभा रहा है। यह स्थिति दिखाती है कि आर्थिक कठिनाइयों के कारण कई बच्चे शिक्षा से दूर हो जाते हैं और कम उम्र में काम करने के लिए मजबूर हो जाते हैं। ऐसे बच्चों के लिए जरूरी है कि उन्हें आर्थिक सहायता, मुफ्त शिक्षा और परिवार के लिए सहयोग उपलब्ध कराया जाए। सामाजिक संस्थाओं और सरकार को मिलकर ऐसे बच्चों की पहचान करनी चाहिए और उन्हें दोबारा शिक्षा से जोड़ने के प्रयास करने चाहिए, ताकि उनका बचपन और भविष्य सुरक्षित रह सके।

बीमारी और मुश्किलों के बाद बालिकाओं ने फिर पकड़ी स्कूल की राह

बालकनामा रिपोर्टर - प्रीति

बालकनामा रिपोर्टर की पश्चिमी दिल्ली के ठ-86 समुदाय के दौरे के दौरान 9 वर्षीय बालिका स्नेहा (परिवर्तित नाम) से मुलाकात हुई। पहली नजर में वह एक सामान्य बालिका की तरह दिखी, लेकिन बातचीत के दौरान उसकी जिंदगी के संघर्षों के बारे में पता चला। स्नेहा ने बताया कि वह पहले बिहार में रहती थी और बाकी बच्चों की तरह रोज स्कूल जाया करती थी। उसका जीवन सामान्य रूप से चल रहा था, लेकिन एक दिन अचानक उसकी तबीयत बहुत खराब हुई और फिर लगातार रहने लगी। स्नेहा ने बताया कि उसे सीने में तेज दर्द होता था और कई बार खून की उल्टियां भी होती थीं। धीरे-धीरे उसकी हालत और गंभीर होती गई। गांव में अच्छे इलाज की सुविधा नहीं होने के कारण उसके परिवार को मजबूर होकर दिल्ली आना पड़ा, ताकि उसका इलाज हो सके। दिल्ली आने के बाद उसका इलाज शुरू हुआ, लेकिन इस दौरान उसकी पढ़ाई पूरी तरह रुक गई। घर में रहकर वह अकेलापन और उदासी महसूस करने लगी। उसे अपना पुराना स्कूल और दोस्त बहुत याद आते थे। इसी दौरान स्नेहा की मुलाकात चेतना संस्था की सामाजिक कार्यकर्ता से हुई, जिन्होंने उसे चेतना संस्था के बारे में बताया। स्नेहा ने देखा कि वहां कई बच्चे पढ़ने आते हैं, जिससे उसका मन भी पढ़ाई की ओर फिर से जाने लगा। उसकी

स्थिति और पढ़ने की लगन को देखते हुए संस्था के कार्यकताओं ने उसे शिक्षा केंद्र से जोड़ दिया। धीरे-धीरे वह नियमित रूप से केंद्र आने लगी, जहां उसने हिंदी पढ़ना शुरू किया और अपने अधिकारों के बारे में भी जाना। संस्था की कार्यकताओं ने यह सुनिश्चित करने की कोशिश की कि उसकी पढ़ाई दोबारा न रुके। इसके लिए उसके जरूरी दस्तावेज तैयार करवाए गए और स्कूल में उसका दोबारा दाखिला करवाया गया। अब स्नेहा फिर से स्कूल जाने लगी है और पढ़ाई जारी रखे हुए है। उसके माता-पिता भी बहुत खुश हैं। उनकी बेटी, जो कभी बीमारी और उदासी से जूझ रही थी, आज मुस्कुराते हुए स्कूल जा रही है। स्नेहा भी खुश है कि उसे दोबारा पढ़ने का मौका मिला और अब वह बाकी बच्चों की तरह स्कूल जा रही है। वहीं दूसरी ओर, 12 वर्षीय बालिका आयशा (परिवर्तित नाम) ने अपनी बात साझा करते हुए बताया कि वह पहले हरियाणा में रहती थी और एक निजी विद्यालय में पढ़ाई करती थी। अचानक उसके पिता की नौकरी छूट गई, जिससे परिवार की आर्थिक स्थिति खराब हो गई। घर की परेशानियों के कारण स्कूल की फीस भरना मुश्किल हो गया। इसी बीच बैंक खाता न होने की वजह से स्कूल में उसे अध्यापिका की डांट भी सुननी पड़ती थी। इन बातों से दुखी होकर आयशा ने फैसला कर लिया कि वह अब स्कूल नहीं जाएगी। जब उसने अपनी परेशानी अपनी माँ को बताई, तो परिवार ने भी कुछ समय के लिए उसकी पढ़ाई रोक दी। बाद में रोजगार की तलाश में उसका परिवार हरियाणा छोड़कर दिल्ली आ गया। यहां आने के बाद उसके पिता ने सब्जी बेचने का काम शुरू किया, जिससे घर की स्थिति में कुछ सुधार आया। दिल्ली आने के बाद आयशा (परिवर्तित नाम) चेतना संस्था से जुड़ी। संस्था के सहयोग से उसका दोबारा स्कूल में दाखिला करवाया गया। अब वह फिर से स्कूल जाने लगी है। आयशा, पढ़ाई शुरू होने से बहुत खुश है और उसका परिवार भी चाहता है कि वह आगे बढ़े और अपने सपने पूरे करे।

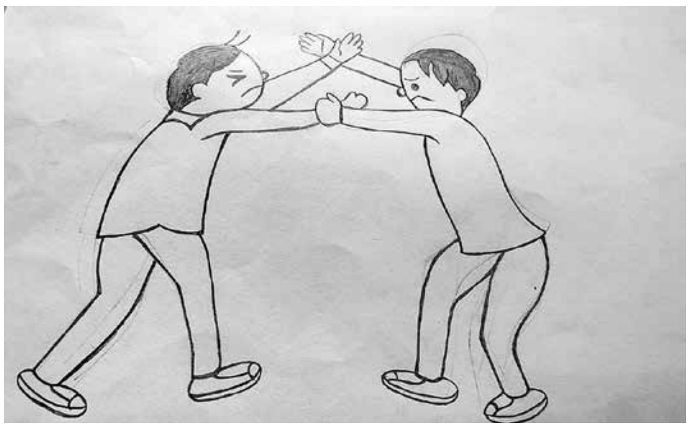

बड़ों के झगड़े में बच्चे हुए घायल, समुदाय में बढ़ी चिंता

बालकनामा रिपोर्टर- फारूख

वजीराबाद क्षेत्र में हाल ही में हुई एक हिंसक घटना ने बच्चों की सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ा दी है। बालकनामा रिपोर्टर फारूख के दौरे के दौरान यह मामला सामने आया। बातूनी रिपोर्टर अजारूल ने बताया कि कुछ दिन पहले बिहार से आए एक 15 वर्षीय किशोर विकास (परिवर्तित नाम) के साथ यह घटना हुई। बताया गया कि विकास एक दुकान पर गोलगप्पे खा रहा था। उसी दौरान वहां मौजूद कुछ लोगों ने, जो बंगाल से आए हुए थे, उसे बिना किसी वजह के अपशब्द कहना शुरू कर दिया। इस पर विकास ने भी जवाब दिया, जिसके बाद दोनों पक्षों के बीच बहस बढ़ गई और कुछ लोगों ने उसकी पिटाई कर दी। घायल हालत में जब विकास घर पहुंचा, तो परिवार वालों ने उससे पूरी बात पूछी। घटना की जानकारी धीरे-धीरे उसके दोस्तों तक भी पहुंच गई। इसके बाद उसके कुछ दोस्त डंडे और लकड़ियां लेकर उन लोगों के पास पहुंच गए। दोनों पक्षों के बीच मारपीट हुई, जिसमें कई लोग घायल हो गए। अगले दिन भी दोनों पक्षों के बीच फिर से झगड़ा हुआ। इस बार कई बच्चे भी इस विवाद में शामिल हो गए और कुछ बच्चों को चोटें आईं। बड़ों के झगड़े में बच्चों का शामिल होना इलाके के लोगों के लिए चिंता का कारण बन गया है। घटना के बाद पूरे क्षेत्र में डर और तनाव का माहौल है। अभिभावकों का कहना है कि ऐसे झगड़ों का असर बच्चों पर बहुत गलत पड़ता है। इससे बच्चों की पढ़ाई, मानसिक स्वास्थ्य और व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। स्थानीय लोगों का मानना है कि ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए समुदाय में आपसी बातचीत और शांति बनाए रखना बहुत जरूरी है। साथ ही, अभिभावकों को भी बच्चों को इस तरह के विवादों से दूर रखने की कोशिश करनी चाहिए।

छोटी उम्र में बड़ी ज़िम्मेदारी

बालकनामा रिपोर्टर- शिरीष्ठिका

गुरुग्राम के जेमडी टावर के पास दौरे के दौरान बालकनामा रिपोर्टर शिरीष्ठिका ने बच्चों की स्थिति को करीब से समझने की कोशिश की। इसी दौरान उनकी मुलाकात 8 वर्षीय शिफा (परिवर्तित नाम) से हुई, जिसकी जिम्मेदारियां उसकी उम्र से कहीं ज्यादा बड़ी हैं। बातचीत में शिफा ने बताया कि उसे पढ़ना बहुत अच्छा लगता है। वह भी दूसरे बच्चों की तरह स्कूल जाना चाहती है, नई चीजें सीखना चाहती है और अपने दोस्तों के साथ पढ़ाई करना चाहती है। लेकिन घर की परिस्थितियों के कारण उसका यह सपना पूरा नहीं हो पा रहा है। शिफा ने बताया कि उसकी माँ उसे घर पर छोटे

भाई-बहनों की देखभाल करने के लिए कहती हैं। सुबह से लेकर पूरे दिन तक वह बच्चों को संभालती है, उन्हें खाना खिलाती है और उनका ध्यान रखती है। इसके साथ ही उसे घर के कई काम भी करने पड़ते हैं, जैसे झाड़ू-पोंछा, बर्तन साफ करना और घर की सफाई करना। इन सभी जिम्मेदारियों की वजह से शिफा के पास पढ़ाई के लिए समय ही नहीं बचता। इसी कारण वह जेमडी टावर समुदाय स्थित शिक्षा केंद्र पर नियमित रूप से नहीं आ पाती। धीरे-धीरे उसकी पढ़ाई प्रभावित हो रही है और वह दूसरे बच्चों की तरह शिक्षा से जुड़ नहीं पा रही है। शिरीष्ठिका से बात करते समय शिफा के चेहरे पर पढ़ाई की इच्छा साफ दिखाई दे रही थी। उसने कहा कि अगर उसे मौका मिले, तो वह जरूर पढ़ना चाहती है और अपने सपनों को पूरा करना चाहती है। यह केवल शिफा की कहानी नहीं है। ऐसे कई बच्चे हैं, जो घर की जिम्मेदारियों और आर्थिक परेशानियों के कारण पढ़ाई से दूर हो जाते हैं। कई बार कम उम्र में ही बच्चों पर इतने काम आ जाते हैं कि उनका बचपन और शिक्षा दोनों पीछे छूटने लगते हैं। ऐसे बच्चों के लिए सहयोग और जागरूकता बहुत जरूरी है। परिवारों को शिक्षा का महत्व समझाने की जरूरत है, ताकि बच्चे पढ़ाई से जुड़े रह सकें। साथ ही समाज, समुदाय और सामाजिक संस्थाओं को मिलकर प्रयास करना चाहिए, ताकि हर बच्चे को उसकी उम्र के अनुसार शिक्षा, सुरक्षा और एक अच्छा बचपन मिल सके।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

झुग्गियां हटाने से कई परिवार बेघर, बच्चों की पढ़ाई पर पड़ा असर

बालकनामा रिपोर्टर- फारूख

वजीराबाद सेक्टर 52 क्षेत्र में हाल ही में एक दुखद घटना सामने आई, जहां झुग्गियों को हटाए जाने के बाद कई परिवार बेघर हो गए। बालकनामा रिपोर्टर फारूख के दौरे के दौरान यह स्थिति देखने को मिली। इस घटना का सबसे ज्यादा असर बच्चों पर पड़ा है। स्थानीय लोगों के अनुसार, प्रशासन की कार्रवाई अचानक हुई, जिससे परिवारों को अपना सामान समेटने का पूरा समय तक नहीं मिल पाया। कई लोगों के कपड़े, जरूरी दस्तावेज, बर्तन और बच्चों की किताबें मलबे में दब गईं। कुछ परिवारों का कहना है कि उनके छोटे बच्चों का स्कूल का सामान भी टूट-फूट गया, जिससे बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है। झुग्गियां टूटने के बाद कई परिवार खुले आसमान के नीचे रहने को मजबूर हैं। बच्चों को खाने-पीने के सामान, साफ पानी और सुरक्षित जगह जैसी जरूरी सुविधाओं के लिए परेशानी झेलनी पड़ रही है। तेज गर्मी और असुरक्षित माहौल के कारण छोटे बच्चों और बुजुर्गों की दिक्कतें और बढ़ गई हैं। दौरे के दौरान कई बच्चे उदास दिखाई दिए। कुछ बच्चों ने बताया कि अब वे ठीक से स्कूल नहीं जा पा रहे हैं, क्योंकि उनके पास किताबें, यूनिफॉर्म और पढ़ने की जगह नहीं बची है। लगातार बदलती परिस्थितियों का असर बच्चों की मानसिक स्थिति पर भी पड़ सकता है। स्थानीय लोगों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने प्रशासन से मांग की है कि प्रभावित परिवारों को जल्द से जल्द सुरक्षित रहने की जगह दी जाए। साथ ही बच्चों के लिए शिक्षा, भोजन, पानी और स्वास्थ्य जैसी जरूरी सुविधाओं की व्यवस्था भी की जाए, ताकि उनका भविष्य प्रभावित न हो।

गंदे पानी और गंदगी से लोग परेशान, बच्चों में बढ़ रही खुजली की समस्या

बालकनामा रिपोर्टर- दिव्यांशी

समुदाय में साफ पानी की कमी और आसपास फैली गंदगी के कारण लोगों को कई परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। बालकनामा रिपोर्टर दिव्यांशी द्वारा बस्ती के दौरे के दौरान यह समस्या सामने आई। बस्ती में बनी होदी (पानी का टैंक) का गंदा पानी लोगों के लिए बड़ी चिंता का कारण बन गया है। जब दिव्यांशी ने स्थानीय लोगों से बातचीत की, तो पता चला कि होदी की काफी समय से सफाई नहीं हुई है। लोगों का कहना है कि ठेकेदार द्वारा नियमित सफाई नहीं करवाने के कारण पानी में कचरा, गंदगी और काई जमा हो गई है। इसके बावजूद लोग उसी पानी का इस्तेमाल नहाने, कपड़े धोने, साफ-सफाई और कई बार पीने तक के लिए करने को मजबूर हैं। गंदे पानी के कारण लोगों में खुजली और त्वचा से जुड़ी समस्याएँ बढ़ रही हैं। समुदाय के बच्चों ने बताया कि इस पानी का इस्तेमाल करने के बाद उनके शरीर में खुजली होने लगी है। लगातार इस समस्या से जूझने के कारण लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी भी प्रभावित हो रही है। होदी के आसपास भी काफी गंदगी फैली हुई है। वहीं पास में लोगों को बर्तन साफ करने पड़ते हैं। गंदगी और बदबू के कारण वहाँ रहना मुश्किल होता जा रहा है। कई लोगों ने बताया कि अगर जल्द समाधान नहीं हुआ, तो उन्हें यह जगह छोड़कर दूसरी जगह रहने के बारे में सोचना पड़ेगा। स्थानीय निवासियों ने इस समस्या को लेकर ठेकेदार से कई बार शिकायत की है और होदी की सफाई करवाने की मांग की है। लेकिन अब तक इस पर कोई कार्रवाई नहीं हुई है। लोगों का कहना है कि संबंधित अधिकारियों और ठेकेदार को जल्द से जल्द होदी की सफाई करवानी चाहिए और साफ पानी की व्यवस्था सुनिश्चित करनी चाहिए। साथ ही बस्ती में नियमित साफ-सफाई पर भी ध्यान देना जरूरी है, ताकि लोगों को स्वच्छ और सुरक्षित वातावरण मिल सके।

चक्करपुर, गुरुग्राम के बच्चों का चिड़ियाघर भ्रमण, सपनों को मिला सच होने का अवसर

बालकनामा रिपोर्टर- काजल
बातूनी रिपोर्टर- दीपांशु

गुरुग्राम के चक्करपुर क्षेत्र में रहने वाले बच्चों के लिए एक दिन बहुत खास बन गया, जब चेतना संस्था द्वारा उन्हें शैक्षिक और मनोरंजक भ्रमण के लिए चिड़ियाघर ले जाया गया। यह भ्रमण बच्चों के लिए सिर्फ घूमने का मौका नहीं था, बल्कि उनके जीवन का एक नया और यादगार अनुभव भी बना। बालकनामा की रिपोर्टर काजल ने इस दौरान बच्चों से बातचीत की। बच्चों के चेहरों पर खुशी और उत्साह साफ दिखाई दे रहा था। कई बच्चे ऐसे थे, जो पहली बार चिड़ियाघर देखने गए थे। दीपक (परिवर्तित नाम) नाम के एक बच्चे ने खुशी जताते हुए कहा, 'दीदी, हमें चेतना संस्था से चिड़ियाघर घुमाने लेकर गए थे। मुझे वहां बहुत अच्छा लगा।' उसने बताया कि उसने पहली बार इतने सारे जानवरों को करीब से देखा। बच्चों ने चिड़ियाघर में अलग-अलग प्रकार के हिरण, शेर, सफेद बाघ, चीता, हाथी और बंदरों को देखा। जानवरों के साथ-साथ रंग-बिरंगे पक्षियों ने भी बच्चों को बहुत आकर्षित किया। बच्चों ने तोता, मकाओ, कबूतर, वन मुर्गा, उल्लू, बाज, चील, तीतर और शुतुरमुर्ग जैसे कई पक्षियों को देखा। इसके अलावा उन्होंने मगरमच्छ, मछलियां, हंस और बत्तख जैसे जलीय जीवों को भी देखा। बच्चों के लिए यह अनुभव बहुत नया और रोचक था। दीपक ने बताया कि वह पहले सिर्फ दूसरों से चिड़ियाघर के बारे में सुनता था। उसे लगता था कि शायद वह कभी वहां नहीं जा पाएगा, लेकिन इस भ्रमण ने उसका सपना पूरा कर दिया। यह भ्रमण बच्चों के लिए बहुत प्रेरणादायक रहा। इससे बच्चों को न केवल खुशी मिली, बल्कि उन्हें प्रकृति और जीव-जंतुओं के बारे में नई बातें सीखने का मौका भी मिला। साथ ही बच्चों के मन में यह विश्वास भी बढ़ा कि उनके सपने भी सच हो सकते हैं।

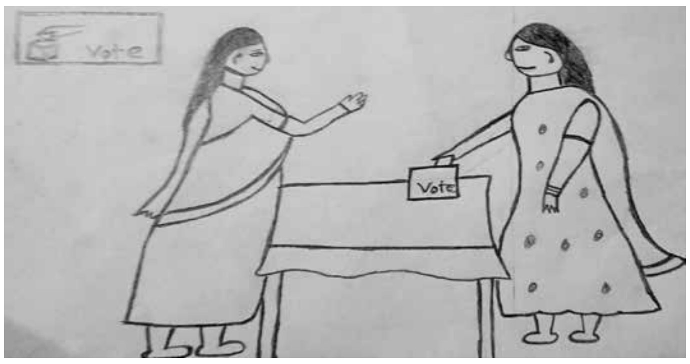

चुनाव के लिए घर लौट रहे परिवार, बच्चों की शिक्षा पर पड़ रहा असर

बालकनामा रिपोर्टर - फारूख

बालकनामा रिपोर्टर फारूख द्वारा वजीराबाद क्षेत्र के दौरे के दौरान यह बात सामने आई कि हाल ही में पश्चिम बंगाल में होने वाले चुनावों के कारण गुरुग्राम में रह रहे कई प्रवासी परिवार अपने गृह राज्य वापस लौट रहे हैं। इसका सीधा असर बच्चों की पढ़ाई पर पड़ रहा है। गुरुग्राम में काम करने वाले कई माता-पिता चुनाव के समय अपने गाँव और शहरों में वोट डालने के लिए जाते हैं। बच्चों को अकेला छोड़ना संभव नहीं होता, इसलिए वे उन्हें भी अपने साथ ले जाते हैं। इस वजह से बच्चों की स्कूल की पढ़ाई बीच में रुक जाती है। कई बच्चों को कई दिनों या हफ्तों तक स्कूल से दूर रहना पड़ता है। इससे उनका होमवर्क अधूरा रह जाता है और पढ़ाई की निरंतरता टूट जाती है। कुछ बच्चों की परीक्षाओं की तैयारी भी प्रभावित होती है। लगातार स्कूल से दूर रहने के कारण धीरे-धीरे पढ़ाई में उनकी रुचि भी कम होने लगती है। अभिभावकों का कहना है कि मतदान करना उनका अधिकार और जिम्मेदारी दोनों है, इसलिए वे चुनाव को नजरअंदाज नहीं कर सकते। साथ ही, बच्चों को अकेला छोड़ना सुरक्षित नहीं होता, इसलिए उन्हें अपने साथ ले जाना जरूरी हो जाता है। इस समस्या को कम करने के लिए स्कूलों में विशेष कक्षाओं की व्यवस्था की जा सकती है, ताकि वापस आने के बाद बच्चे अपनी छूटी हुई पढ़ाई पूरी कर सकें। इसके अलावा, ऑनलाइन पढ़ाई और शिक्षकों की अतिरिक्त मदद भी बच्चों के लिए फायदेमंद हो सकती है। सरकार और स्कूलों को मिलकर ऐसे कदम उठाने चाहिए, जिससे चुनाव के दौरान बच्चों की शिक्षा पर कम से कम असर पड़े और उनकी पढ़ाई लगातार जारी रह सके।

वार्षिक परीक्षा में छात्रा ने प्राप्त किया द्वितीय स्थान

बालकनामा रिपोर्टर- अंजलि

बालकनामा रिपोर्टर अंजलि ने गुरुग्राम स्थित बादशाहपुर समुदाय का दौरा किया। इस भ्रमण के दौरान उन्होंने स्कूल जाने वाले बच्चों से उनके वार्षिक परीक्षा परिणाम के बारे में बात की। बातचीत के समय 8 साल की बालिका निशा (परिवर्तित नाम) बहुत खुश और उत्साहित दिखाई दी। निशा ने बताया कि वह चेतना संस्था से जुड़ी हुई है और बादशाहपुर के एक सरकारी विद्यालय में कक्षा दूसरी की छात्रा है। उसने खुशी से बताया कि 1 अप्रैल को घोषित हुए परीक्षा परिणाम में उसने अपनी कक्षा में दूसरा स्थान प्राप्त किया है। उसकी इस उपलब्धि पर स्कूल की अध्यापिका ने उसे पुरस्कार देकर सम्मानित भी किया। निशा ने बताया कि जब वह पुरस्कार लेकर घर पहुंची, तो उसने सबसे पहले अपनी माता को वह पुरस्कार दिखाया। यह देखकर उसकी माता बहुत खुश हुईं। उन्होंने निशा को आगे भी इसी तरह मेहनत और लगन के साथ पढ़ाई करने के लिए प्रेरित किया। निशा ने यह भी बताया कि उसने अपनी सफलता की जानकारी चेतना संस्था की सामाजिक कार्यकर्ता को भी दी। उन्होंने अन्य बच्चों के सामने उसकी प्रशंसा की, जिससे उसका उत्साह और आत्मविश्वास और बढ़ गया। बातचीत के दौरान निशा ने कहा कि वह अगली कक्षा में और अधिक मेहनत से पढ़ाई करेगी और प्रथम स्थान प्राप्त करने का प्रयास करेगी। उसने यह भी बताया कि उसे आर्ट और क्राफ्ट गतिविधियों में भाग लेना बहुत पसंद है। इन गतिविधियों में अच्छा प्रदर्शन करने पर उसे कई बार प्रोत्साहन भी मिला है। अंत में बालकनामा रिपोर्टर अंजलि ने सभी बच्चों को निशा से प्रेरणा लेने और मेहनत व लगन के साथ पढ़ाई करने का संदेश दिया।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

ईंधन के लिए भटकती माताएँ, घरों में बंद रह जाते मासूम

बालकनामा रिपोर्टर - अनुष्का

गुरुग्राम की खोटा कॉलोनी क्षेत्र में हाल ही में एक ऐसी घटना सामने आई, जिसने बच्चों की सुरक्षा को लेकर कई सवाल खड़े कर दिए हैं। बालकनामा की रिपोर्टर अनुष्का जब क्षेत्र के दौरे पर थीं, तब उन्हें एक बंद झुग्गी के अंदर से बच्चों के रोने की आवाज सुनाई दी। आसपास कोई बड़ा व्यक्ति मौजूद नहीं था और झुग्गी के दरवाजे पर बाहर से ताला लगा हुआ था। यह देखकर स्थिति काफी गंभीर लगी। रिपोर्टर अनुष्का ने तुरंत आसपास मदद की तलाश की। वहां से गुजर रहे एक बर्तन बेचने वाले व्यक्ति की सहायता से झुग्गी का ताला खोला गया। अंदर जाकर देखा गया कि लगभग 8 साल का एक बच्चा सो रहा था, जबकि उसका 3 साल का छोटा भाई जोर-जोर से रो रहा था। दोनों बच्चे काफी समय से झुग्गी के अंदर अकेले बंद थे। रिपोर्टर और स्थानीय व्यक्ति ने बच्चों को पानी पिलाया और उन्हें शांत करने की कोशिश की।

बाद में आसपास के लोगों से जानकारी लेने पर पता चला कि बच्चों की माँ जंगल में लकड़ियां लेने गई हुई थीं। क्षेत्र में गैस जैसी सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं और बाजार

में लकड़ियों की कीमत भी बढ़ गई है। इसी वजह से कई महिलाओं को मजबूरी में जंगल जाकर लकड़ियां इकट्ठा करनी पड़ती हैं, ताकि वे घर पर खाना बना सकें। इस मजबूरी के कारण छोटे बच्चों को घर में अकेला छोड़ना पड़ता है, जो उनके लिए बेहद असुरक्षित साबित हो सकता है। बंद झुग्गी में अकेले रहने के दौरान बच्चों को कई तरह के खतरे हो सकते हैं, जैसे बिजली के तारों से करंट लगना, आग लगना या किसी अन्य दुर्घटना का शिकार होना। ऐसी स्थिति में समय पर मदद न मिलने पर बड़ा हादसा भी हो सकता है। स्थिति को समझते हुए रिपोर्टर अनुष्का ने बच्चों को पास में रहने वाले उनके रिश्तेदारों के पास सुरक्षित पहुंचाया, ताकि उनकी माँ के लौटने तक उनकी देखभाल हो सके। साथ ही उन्होंने समुदाय के लोगों से बात कर बच्चों को अकेला न छोड़ने की अपील भी की। इस घटना के बाद समुदाय के लोगों ने कहा कि वे आगे से ज्यादा सावधानी रखेंगे और बच्चों की सुरक्षा पर ध्यान देंगे। साथ ही यह भी जरूरी है कि ऐसे क्षेत्रों में गैस और दूसरी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं, ताकि परिवारों को इस तरह की कठिन परिस्थितियों का सामना न करना पड़े।

स्कूल दाखिले से सड़क एवं कामकाजी बच्चों में खुशी की लहर

बालकनामा रिपोर्टर- अंजलि

गुरुग्राम के गोगा कॉलोनी समुदाय में बालकनामा की रिपोर्टर अंजलि ने बच्चों से बातचीत की। बातचीत के दौरान उन्होंने यह जानने की कोशिश की कि क्या हाल के समय में किसी बच्चे का स्कूल में दाखिला हुआ है और यदि नहीं हुआ, तो उसके पीछे क्या परेशानियाँ सामने आ रही हैं। इसी दौरान समुदाय में स्थित चेतना संस्था के शिक्षा केंद्र के बालक अर्जुन (परिवर्तित नाम) ने खुशी के साथ बताया कि कई कठिनाइयों के बाद उसका स्कूल में दाखिला हो गया है। अर्जुन ने बताया कि प्रवेश प्रक्रिया के दौरान उसकी माँ और चेतना संस्था की सामाजिक कार्यकर्ता सुबह से ही स्कूल में मौजूद रहीं। दाखिले के लिए कई जरूरी दस्तावेज मांगे गए, जिनमें कुछ दस्तावेज उनके पास उपलब्ध नहीं थे। उन दस्तावेजों को बनवाने में संस्था की कार्यकर्ता ने महत्वपूर्ण सहयोग किया। उसने बताया कि उन्हें कई बार सीएससी केंद्र और स्कूल के चक्कर लगाने पड़े। कभी स्कूल की ओर से प्रवेश होने की बात कही जाती, तो कभी प्रक्रिया में देरी हो जाती थी।

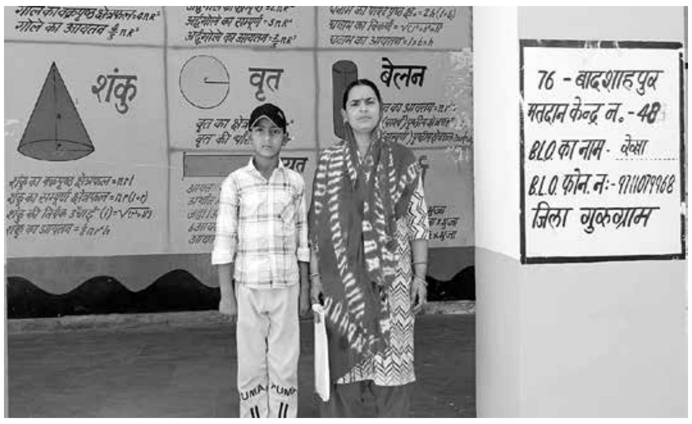

विद्यालय द्वारा जन्म प्रमाण पत्र और आय प्रमाण पत्र जैसे जरूरी दस्तावेज मांगे गए, जिन्हें बनवाना उनके लिए आसान नहीं था। कई परेशानियों और लगातार कोशिशों के बाद आखिरकार उसका स्कूल में दाखिला हो गया। इससे वह बहुत खुश है और अब नियमित रूप से स्कूल जाने के लिए उत्साहित भी है। अर्जुन ने बताया कि उसकी माँ ने उसके लिए स्कूल की वर्दी भी खरीद दी है, जिससे उसकी खुशी और बढ़ गई है। अपने आसपास के बच्चों को स्कूल जाते देखकर उसका भी मन पढ़ाई करने का हुआ। अब उसकी दोस्ती उन बच्चों से भी हो गई है, जो पहले से स्कूल जा रहे हैं। उसने आगे बताया की कक्षा अध्यापिका ने उसे उसका कक्षा-कक्ष भी दिखाया और वह जल्द ही नियमित रूप से स्कूल जाना शुरू करेगा। अर्जुन ने यह भी कहा कि वह अपने आसपास के अन्य बच्चों को भी स्कूल में दाखिला लेने के लिए प्रेरित करेगा। अंत में रिपोर्टर अंजलि ने कहा कि यह बहुत खुशी की बात है। उन्होंने उम्मीद जताई कि हर बच्चा शिक्षा के अधिकार से जुड़कर स्कूल तक पहुंचे और अपने सपनों को पूरा करे।

पिता के नशे के कारण बच्चे स्कूल जाने से हो रहे वंचित

बालकनामा रिपोर्टर- दिव्यांशी

समुदाय में बढ़ती नशे की समस्या का असर अब बच्चों की पढ़ाई और उनके भविष्य पर भी दिखाई देने लगा है। बालकनामा रिपोर्टर दिव्यांशी द्वारा क्षेत्र के दौरे के दौरान यह बात सामने आई कि कई घरों में होने वाले झगड़ों का मुख्य कारण नशा है। इन झगड़ों का सबसे ज्यादा असर बच्चों पर पड़ रहा है, जिससे उनकी पढ़ाई प्रभावित हो रही है। दौरे के दौरान पता चला कि समुदाय में कुछ लोग रोज शराब पीते हैं और नशे की हालत में घर लौटकर परिवार के साथ झगड़ा और मारपीट करते हैं। ऐसे माहौल में बच्चों को डर और तनाव का सामना करना पड़ता है। कई बार घर का माहौल इतना खराब हो जाता है कि बच्चे ठीक से पढ़ भी नहीं पाते और स्कूल जाना भी छोड़ देते हैं। इसी दौरान समुदाय में रहने वाली एक 13 साल की बालिका ऋचा (परिवर्तित नाम) की कहानी सामने आई। ऋचा के पिता एक रात शराब पीकर घर लौटे और घर के खर्च के लिए रखे गए पैसों में से कुछ पैसे निकाल लिए। इस बात को लेकर उसके माता-पिता के बीच बड़ा झगड़ा हो गया। स्थिति इतनी खराब हो गई

कि ऋचा की माँ उसे अपने साथ उस कोठी में ले गई, जहाँ वह काम करती है। बाद में वह अपने मायके चली गई। इस पारिवारिक विवाद का असर ऋचा की पढ़ाई पर पड़ा। हाल ही में उसका स्कूल में दाखिला हुआ था, लेकिन झगड़े और घर की परेशानी के कारण वह 2 से 3 दिनों तक स्कूल नहीं जा पाई। ऋचा को पढ़ाई करना और स्कूल जाना बहुत पसंद है, लेकिन घर की परिस्थितियाँ उसकी शिक्षा में रुकावट बन रही हैं। समुदाय में ऐसे कई बच्चे हैं, जिनके घरों में नशे की वजह से रोज झगड़े होते हैं। ऐसे बच्चे नियमित रूप से स्कूल नहीं जा पाते और धीरे-धीरे पढ़ाई में पीछे रह जाते हैं। लगातार तनाव और डर के माहौल में रहने से बच्चों का मन पढ़ाई से हटने लगता है। इसका असर उनके मानसिक और शैक्षिक विकास पर पड़ता है और उनका भविष्य भी प्रभावित होता है। इस समस्या को रोकने के लिए समुदाय में नशा मुक्ति के प्रति जागरूकता बढ़ाना बहुत जरूरी है। परिवारों को भी सही सलाह और सहायता मिलनी चाहिए, ताकि बच्चों को सुरक्षित और अच्छा माहौल मिल सके।

आर्थिक तंगी के कारण बच्चों की पढ़ाई हो रही प्रभावित

बालकनामा रिपोर्टर- ज्योति

गुरुग्राम के सरस्वती विहार समुदाय में रहने वाले कई बच्चों की शिक्षा इन दिनों गंभीर रूप से प्रभावित हो रही है। जहाँ एक तरफ शहर के दूसरे बच्चे अच्छे स्कूलों में पढ़ाई करके अपने सपनों को पूरा करने की ओर बढ़ रहे हैं, वहीं इस बस्ती के कई बच्चे आज भी शिक्षा से दूर हैं। सरस्वती विहार में रहने वाले ज्यादातर परिवार आर्थिक रूप से कमजोर हैं। यहाँ कई लोग कूड़ा बीनने, दिहाड़ी मजदूरी करने और घरों में सफाई का काम करके अपने परिवार का पालन-पोषण करते हैं। घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण बच्चों को भी छोटी उम्र से ही काम में हाथ बँटाना पड़ता है। इसी वजह से कई बच्चे स्कूल नहीं जा पाते और कुछ बच्चों की पढ़ाई बीच में ही छूट जाती है। समुदाय में कई ऐसे बच्चे हैं, जिनके पास स्कूल की किताबें, कॉपियाँ और वर्दी तक

नहीं हैं। कुछ बच्चों के पास आधार कार्ड जैसे जरूरी दस्तावेज भी नहीं हैं, जिसके कारण उनका स्कूल में दाखिला करवाना मुश्किल हो जाता है। इन परेशानियों की वजह से बच्चे शिक्षा की मुख्यधारा से दूर होते जा रहे हैं। समुदाय की 12 वर्षीय ज्योति (परिवर्तित नाम) बताती है कि वह पढ़ना चाहती थी, लेकिन परिवार की जिम्मेदारियों के कारण अब उसे काम करना पड़ता है। वह अपनी माँ के साथ घरों में सफाई का काम करती है। ज्योति कहती है, 'मुझे पढ़ाई करना बहुत अच्छा लगता था, लेकिन अब समय नहीं मिल पाता। अगर मुझे मौका मिले, तो मैं फिर से स्कूल जाना चाहती हूँ।' इसी तरह कई छोटे बच्चे दिनभर कूड़ा बीनते हैं या अपने माता-पिता के साथ काम पर जाते हैं। जिन हाथों में किताबें और पेंसिल होनी चाहिए, उनमें बोरे और झाड़ू नजर आते हैं। खेलने और सीखने की उम्र में ये बच्चे जिम्मेदारियों का बोझ उठाने को मजबूर हैं, जिसका असर उनके बचपन और भविष्य दोनों पर पड़ रहा है। समुदाय के लोगों का कहना है कि अगर बच्चों को सही मार्गदर्शन, मुफ्त शिक्षा और जरूरी सुविधाएँ मिलें, तो वे भी आगे बढ़ सकते हैं। इसके लिए स्कूलों, सामाजिक संस्थाओं और सरकार को मिलकर काम करने की जरूरत है, ताकि हर बच्चा शिक्षा से जुड़ सके और अपने सपनों को पूरा कर सके।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

पानी की कमी से जूझती बस्ती, गंदगी में रहने को मजबूर हुए बच्चे

बातूनी रिपोर्टर राहुल व रिपोर्टर किशन

नोएडा शहर के विकसित इलाकों के बीच बसे सेक्टर 67 के आसपास की झुग्गी-बस्तियों में रहने वाले लोग आज भी कई बुनियादी सुविधाओं से वंचित हैं। यहां सबसे बड़ी समस्या पानी की कमी की है, जिसका सबसे ज्यादा असर बच्चों की साफ-सफाई और स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। बालकनामा रिपोर्टरों के दौरे के दौरान देखा गया कि बस्ती में कई छोटे बच्चे गंदगी में रहने को मजबूर हैं। कई बच्चों के कपड़े गंदे थे और कुछ बच्चे काफी समय से न नहाने के कारण अस्वच्छ दिखाई दिए। बातचीत के दौरान 13 वर्षीय राहुल (परिवर्तित नाम) ने बताया कि बस्ती में पानी की भारी कमी है, इसलिए लोग चाहकर भी साफ-सफाई नहीं रख पाते। स्थानीय लोगों के अनुसार, इस इलाके में 500 से अधिक झुग्गियां हैं, जहां लोग छोटे-छोटे समूहों में रहते हैं। हर समूह का एक अलग ठेकेदार है, लेकिन कहीं भी सरकारी पानी की सुविधा उपलब्ध नहीं है। पानी के लिए, लोगों को पास के गांवों पर निर्भर रहना पड़ता है। कई परिवार मोटर से पानी भरने के बदले हर महीने लगभग 500 रुपये तक खर्च करते हैं। लोगों ने बताया कि जब बिजली चली जाती है, तो कई दिनों तक मोटर नहीं चल पाती, जिससे पानी की समस्या और बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति में लोगों को फैक्ट्रियों या दूसरे स्थानों से पानी मांगकर लाना पड़ता है। कई महिलाएं और बच्चे ठेली या सिर पर बर्तन रखकर दूर से पानी लाते हैं, जिससे उन्हें काफी परेशानी उठानी पड़ती है। बस्ती के लोगों का कहना है कि जब पानी मिल जाता है, तभी वे अपने बच्चों को साफ रख पाते हैं। लेकिन ज्यादातर समय पानी की कमी के कारण गंदगी बनी रहती है, जिससे बीमारियों का खतरा भी बढ़ जाता है। यह स्थिति दिखाती है कि शहर के विकास के बावजूद कुछ बस्तियां अब भी जरूरी सुविधाओं से दूर हैं। स्थानीय लोगों ने संबंधित विभागों से मांग की है कि बस्ती में जल्द पानी, बिजली और साफ-सफाई की उचित व्यवस्था की जाए, ताकि बच्चों का स्वास्थ्य और भविष्य सुरक्षित हो सके।

गली में खेलते समय हुआ हादसा, बच्चे के सिर में आई चोट

बालकनामा रिपोर्टर - प्रीति

वेस्ट दिल्ली के ठ-86 समुदाय में बालकनामा रिपोर्टर के दौरे के दौरान सात वर्षीय विवान (परिवर्तित नाम) से मुलाकात हुई, जो हाल ही में एक दर्दनाक हादसे का शिकार हुआ। विवान और आसपास के लोगों ने बताया कि वह रोज की तरह अपने मोहल्ले की गली में दोस्तों के साथ पकड़म-पकड़ाई खेल रहा था। गली में बच्चों की हंसी-खुशी और खेलकूद का माहौल था और सभी बच्चे अपने खेल में मग्न थे। इसी दौरान खेलते-खेलते अचानक विवान का संतुलन बिगड़ गया और वह तेजी से दौड़ते हुए जमीन पर गिर पड़ा। गिरते समय उसका सिर सीधे जमीन से टकराया, जिससे उसे चोट लग गई और उसके सिर से खून बहने लगा। यह देखकर वहां मौजूद बच्चे घबरा गए। कुछ बच्चे तुरंत उसकी मदद के लिए आगे आए, जबकि अन्य बच्चों ने आसपास के बड़ों को आवाज लगाकर बुलाया। घटना की जानकारी मिलते ही विवान की माँ तुरंत मौके पर पहुंचीं और बिना देर किए उसे पास के अस्पताल लेकर गईं। अस्पताल में डॉक्टरों ने तुरंत उसका प्राथमिक उपचार किया। जांच के बाद डॉक्टरों ने बताया कि चोट ज्यादा गंभीर नहीं है, लेकिन कुछ दिनों तक आराम करना जरूरी है। डॉक्टरों ने परिवार को सलाह दी कि विवान के घाव की नियमित देखभाल की जाए और उसे कुछ समय तक सावधानी बरतने दी जाए, ताकि वह जल्द पूरी तरह स्वस्थ हो सके। इस घटना के बाद परिवार और आसपास के लोग बच्चों की सुरक्षा को लेकर अधिक सतर्क हो गए हैं।

आवारा कुत्तों का बढ़ता खतरा, बच्चे की जान पर बनी आफत

बालकनामा रिपोर्टर- करण

नाथूपुर बस्ती में आवारा कुत्तों की समस्या लगातार बढ़ती जा रही है। इससे खासकर छोटे बच्चों की सुरक्षा को लेकर लोगों की चिंता बढ़ गई है। बालकनामा रिपोर्टर करण कुमार के दौरे के दौरान एक ऐसी घटना सामने आई, जिसने बस्ती के लोगों को डर और चिंता में डाल दिया। दौरे के दौरान करण ने देखा कि 12 वर्षीय शुभकांत (परिवर्तित नाम) नाम का एक बच्चा रो रहा था। जब उससे बात की गई, तो उसने बताया कि वह घर लौट रहा था। तभी अचानक एक आवारा कुत्ता पीछे से आया और उसने उसके पैर में काट लिया। कुत्ते के काटने से उसके पैर में गहरी चोट लग गई और खून भी निकलने लगा। घटना की जानकारी मिलते ही करण ने तुरंत बच्चे की माँ को बुलाया और उन्हें पूरी बात बताई। बच्चे की हालत देखकर उसकी माँ बहुत घबरा गई। करण ने उन्हें शांत करते हुए सलाह दी कि बच्चे को तुरंत डॉक्टर के पास ले जाना जरूरी है। शुभकांत की माँ उसे तुरंत इलाज के लिए डॉक्टर के पास लेकर गईं। जांच के बाद डॉक्टर ने बताया कि कुत्ते ने गहराई से काटा है, इसलिए समय पर इंजेक्शन लगवाना बहुत जरूरी है। डॉक्टर ने बच्चे का प्राथमिक उपचार किया और चार टीके लगवाने की सलाह दी। साथ ही उन्होंने चेतावनी दी कि अगर इलाज में लापरवाही की गई, तो गंभीर बीमारी का खतरा हो सकता है। इस घटना के बाद बस्ती के लोगों में डर का माहौल है। अब कई अभिभावक अपने बच्चों को अकेले बाहर भेजने से डर रहे हैं। लोगों का कहना है कि बस्ती में आवारा कुत्तों की संख्या बढ़ती जा रही है, लेकिन इस

समस्या पर अभी तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है। बस्ती के लोगों का मानना है कि बच्चों की सुरक्षा के लिए जल्द से जल्द इस समस्या का समाधान होना चाहिए, ताकि बच्चे बिना डर के खेल सकें और स्कूल जा सकें।

बदलती सोच से पनपता सुरक्षित बचपन, अभिभावक बैठकों से बढ़ी जागरूकता

बालकनामा रिपोर्ट अमृत

वाल्मीकि कैंप, पश्चिम दिल्ली में आयोजित अभिभावक बैठकों का अच्छा असर अब बच्चों और उनके परिवारों में दिखाई देने लगा है। इन बैठकों के जरिए अभिभावकों को बच्चों की पढ़ाई, सुरक्षा और उनके अधिकारों के बारे में जानकारी दी गई। अब कई माता-पिता बच्चों की बातों को पहले से ज्यादा ध्यान से सुनने और समझने लगे हैं। सेंटर में पढ़ने वाली 12 वर्षीय रिया (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'मेरी मम्मी को इन मीटिंग्स से बहुत कुछ सीखने को मिला है। अब उन्हें पॉक्सो एक्ट के बारे में जानकारी है। वे हमें समझाती हैं कि कौन-सा स्पर्श सुरक्षित होता है और कौन-सा असुरक्षित। साथ ही वे दूसरी महिलाओं को भी इसके बारे में बताती हैं।' मीटिंग्स के दौरान पॉक्सो एक्ट (प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रेन फ्रॉम सेक्सुअल ऑफेन्सेज एक्ट) को आसान भाषा में समझाया गया।

अभिभावकों को बताया गया कि यह कानून बच्चों को गलत छूने, शोषण और किसी भी तरह की अनुचित हरकतों से बचाने के लिए बनाया गया है। उन्हें यह भी समझाया गया कि अगर कोई बच्चा किसी स्पर्श से डर, घबराहट या असहज महसूस करे, तो उसे गंभीरता से लेना चाहिए और तुरंत उस पर ध्यान देना जरूरी है। इसी दौरान 14 वर्षीय नीरू (परिवर्तित नाम) ने अपना अनुभव साझा करते हुए कहा, 'अब मेरी मम्मी हमारी बातों को ध्यान से सुनती हैं। पहले अगर हम कुछ कहते थे, तो वे ज्यादा ध्यान नहीं देती थीं, लेकिन अब वे हमें समझने की कोशिश करती हैं।' बच्चों के अनुभवों से दिखाई देता है कि पैरेंट्स मीटिंग्स के जरिए अभिभावकों में जागरूकता बढ़ रही है। वे अब बच्चों की सुरक्षा, भावनाओं और उनकी बातों को ज्यादा गंभीरता से लेने लगे हैं।

हेल्थ कैंप में बच्चों ने कराया स्वास्थ्य परीक्षण, मिली जरूरी जानकारी

बालकनामा रिपोर्टर फारूख

गुरुग्राम के वजीराबाद सेक्टर 52 में आयोजित एक हेल्थ कैंप में बच्चों के बीच काफी उत्साह देखने को मिला। इस कैंप का उद्देश्य बच्चों के स्वास्थ्य की जांच करना और उन्हें साफ-सफाई और सही खान-पान के बारे में जागरूक करना था। कैंप के दौरान डॉक्टर ने बच्चों का चेकअप किया और उन्हें जरूरी सलाह दी।

बच्चों ने भी इसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और अपने स्वास्थ्य के बारे में जानने में रुचि दिखाई। इसी दौरान एक गंभीर मामला भी सामने आया।

एक बच्चे को कुत्ते ने काट लिया था, लेकिन उसकी मां ने अभी तक उसे रैबीज का इंजेक्शन नहीं लगवाया था। यह सुनकर आयोजकों ने तुरंत बच्चे की मां को बुलाया और उन्हें समझाया कि बच्चे को जल्द से जल्द रैबीज का इंजेक्शन लगवाना बहुत जरूरी है।

आयोजकों ने बताया कि ऐसे हेल्थ कैंप बच्चों के लिए बहुत जरूरी होते हैं, क्योंकि इससे उन्हें अपने स्वास्थ्य के बारे में सही जानकारी मिलती है। अभिभावकों ने भी इस पहल की सराहना की और कहा कि ऐसे कार्यक्रम आगे भी होने चाहिए।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए एचसीएल फाउंडेशन, अजीम प्रेमजी फाउंडेशन और Mcarbon Tech Innovation Pvt. Ltd. का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471